पाठ 19

गुप्तकाल एवं उत्तर गुप्तकाल

(300 ई. से 800 ई. तक का भारत)

आइए सीखें

- 300 ई.से. 800 ई. तक के भारत के प्रमुख राजवंश कौन-कौन थे?
- 300 ई. से 800 ई. तक राजनैतिक धार्मिक एवं सामाजिक दशा कैसी थी?

सातवाहन एवं कुषाण साम्राज्य के पतन के पश्चात कई राजवंशों का अभ्युदय हुआ। इनमें वाकाटक और मौखरी वंश के अतिरिक्त गुप्तवंश महत्वपूर्ण था। मौर्यों के पतन के पश्चात् नष्ट हो चुकी भारत की राजनीतिक एकता को गुप्त शासकों ने पुनः अर्जित किया। इस काल में भारत में आर्थिक, सामाजिक, साहित्यिक एवं कला के क्षेत्र में अपार उन्नति हुई। इस कारण गुप्तकाल को **भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग** कहा जाता है। इस वंश में कई शक्तिशाली राजा हुए, जिसमें चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त द्वितीय, कुमारगुप्त एवं स्कन्दगुप्त प्रसिद्ध हैं।

चन्द्रगुप्त प्रथम- गुप्तवंश की स्थापना श्री गुप्त ने की थी। चन्द्रगुप्त प्रथम गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक हुआ था। इसने साकेत (अयोध्या) तथा प्रयाग (इलाहाबाद) को जीतकर अपने साम्राज्य को बढ़ाया। इसने लिच्छवि वंश की राजकुमारी कुमारदेवी से विवाह किया और अपने राज्य की सीमाओं में वृद्धि करके चन्द्रगुप्त स्वतंत्र राज्य का स्वामी बन गया था। तब उसे **'महाराजाधिराज'**, याने राजाओं का राजा कहा जाने लगा था। चन्द्रगुप्त प्रथम का उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त हुआ।

समुद्रगुप्त- चन्द्रगुप्त प्रथम की मृत्यु के बाद उसका पुत्र समुद्रगुप्त राज गद्दी पर बैठा। समुद्रगुप्त एक महान विजेता था। उसने उत्तर भारत के 9 शक्तिशाली राजाओं को जीता और उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। उसके बाद विन्ध्य पर्वत क्षेत्र के 8 गणराज्यों को जीत लिया। फिर समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत के 12 राज्यों पर विजय प्राप्त की बाद में उन राजाओं के राज्य उन्हें वापस लौटा दिए। सीमावर्ती राजाओं ने भी डर कर मित्रता कर ली। इस तरह उसने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

समुद्रगुप्त को भारत के महान राजाओं में गिना जाता है। उसने अच्छी शासन व्यवस्था स्थापित की थी। अपनी प्रजा के प्रति वह बहुत दयावान था। निर्धन, असहाय तथा पीड़ित लोगों की वह सदा सहायता करता था। वह एक बुद्धिमान और कलाप्रिय शासक था। वह स्वयं एक अच्छा कवि था एवं कवियों तथा विद्वानों को आश्रय देता था। गुप्तवंश की वृहत जानकारी इलाहाबाद के किले के स्तम्भ लेख से मिलती है। इसी स्तम्भ पर सम्राट अशोक के विषय में भी लेख अंकित है। गुप्तवंश के सम्राट समुद्रगुप्त की विजयों का इस पर वर्णन है। इसे प्रयागप्रशस्ति कहा जाता है। इस पर खुदे हुए लेख की रचना समुद्रगुप्त के राजकवि हरिषेण ने की थी।

चन्द्रगुप्त द्वितीय- समुद्रगुप्त के बाद चन्द्रगुप्त द्वितीय विशाल साम्राज्य का उत्तराधिकारी बना। शकों को परास्त करना इसकी बड़ी सफलता थी। चन्द्रगुप्त द्वितीय ने ही 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की तथा उज्जैन नगर को अपनी द्वितीय राजधानी बनाया। इसकी सभा में नवरत्न थे। उसने अपना विवाह नाग राजा की कन्या कुबेर नागा से किया तथा अपनी पुत्री का विवाह वाकाटक वंश के राजकुमार रूद्रसेन से किया। इसने आक्रमण, विवाह-संबंधों के द्वारा अपने साम्राज्य को मजबूत किया। अपने पिता समुद्रगुप्त की तरह चन्द्रगुप्त भी महान विजेता था।

उसने मालवा, गुजरात, सौपारा, पंजाब की सात नदियों के पार का क्षेत्र, अरब सागर तट, बंगाल, असम, हिमालय की तलहटी, दक्षिण में नर्मदा नदी तक साम्राज्य को फैलाया और दृढ़ किया।

चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल में प्रसिद्ध **चीनी यात्री फाह्यान** भारत आया था। उसके यात्रा विवरणों

से तथा सिक्के, अभिलेख, ताम्रपत्र आदि से हमें गुप्तकाल के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी मिलती हैं।

प्रशासनिक व्यवस्था - गुप्तकाल में प्रशासन को सुविधापूर्वक चलाने हेतु साम्राज्य को कई प्रांतों में बांटा गया था। प्रान्तों को जिलों में बांटा गया था। शासन की सबसे छोटी इकाई **ग्राम** थी। इस तरह शासन सुव्यवस्थित था। प्रान्तों का शासन उपरिक महाराज* द्वारा चलाया जाता था। जिलों याने 'विषयों' का प्रशासन विषयपति** चलाते थे। ग्राम प्रशासन की देखभाल ग्रामीणों की मदद से गाँव का मुखिया करता था।

सामाजिक व्यवस्था - गुप्त राजाओं के समय प्रजा सुखी और संपन्न थी। सम्राट न्यायप्रिय होने के कारण प्रजा ईमानदार, कानून को मानने वाली, सहिष्णु तथा प्रगतिशील थी। अधिकांश लोग शाकाहारी थे। समाज जातियों में बँटा हुआ था। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र आदि वर्णों की स्थापना हो चुकी थी। इस समय अंतर्जातीय विवाह भी होते थे। अधिकतर जातियाँ आपस में मेल जोल के साथ रहती थीं, परन्तु एक वर्ग ऐसा भी था जिन्हें अछूत समझा जाता था।

व्यापार और व्यवसाय - गुप्तकाल में व्यापार काफी उन्नत था। राष्ट्रीय और अन्तरराष्ट्रीय दोनों प्रकार के व्यापार होते थे। इस काल में जल तथा थल दोनों मार्गों से व्यवसाय एवं व्यापार होता था। इस समय उज्जैन, मथुरा, कौशाम्बी, विदिशा, बनारस, गया, ताम्रलिप्त, मदुरै आदि प्रमुख व्यापारिक केंद्र थे। दक्षिण-पूर्व एशिया के सुवर्णभूमि, वर्मा, कम्पूचिया आदि देशों के साथ भारत का व्यापार होता था।

व्यापारिक उन्नति के कारण समाज की स्थिति उन्नत अवस्था में थी। चारों तरफ शांतिपूर्ण वातावरण था। इसी कारण गुप्तकाल को **'स्वर्ण युग'** के नाम से भी जाना जाता है।

कला एवं साहित्य का विकास- गुप्तकाल में विविध प्रकार की कलाओं का विकास हुआ। मूर्तिकला, चित्रकला, वास्तुकला, संगीत, नाट्यकला आदि का विकास हुआ। गुप्तकाल में बड़े पैमाने पर मूर्तियों, मंदिरों, गुफाओं का निर्माण हुआ। जैस विदिशा के पास उदयगिरि की गुफाएं, भीतरगांव का मंदिर कानपुर में तथा ललितपुर के पास देवगढ़ के मंदिर तिगवा (कटनी)। इसके साथ-साथ देवी-देवताओं, जैन तीर्थकरों, बुद्ध तथा बोधिसत्वों की अनेकों प्रतिमाएँ भी बनायी गयीं। इसका अर्थ है कि राजा हिन्दू धर्म के साथ ही दूसरे धर्मों का भी आदर करते थे। महरौली (दिल्ली) में स्थित लौह स्तंभ गुप्तकाल की तकनीकी एवं स्थापत्यकला का अद्‌भुत नमूना है।

सिक्के पर वीणा बजाते हुए समुद्रगुप्त का चित्र इस बात का प्रमाण है कि उस काल में संगीत एवं नृत्य को अधिक प्रोत्साहन दिया गया। सोने तथा चांदी की मुद्राओं का प्रचलन भी गुप्तकाल में हुआ।

सारनाथ की बुद्ध मूर्ति और मथुरा की वर्धमान महावीर की मूर्ति गुप्तकाल की मूर्तिकला के प्रमुख

***उपरिक महाराज -** प्रांत का प्रमुख व्यक्ति

****विषयपति** - जिले का मुखिया

उदाहरण है।

चित्रकला- गुप्तकाल में चित्रकला का विकास चरम सीमा प्राप्त कर चुका था। अजन्ता की गुफाएँ तथा मध्यप्रदेश में बाघ की गुफाओं का चित्रांकन भी इसी समय हुआ था। अजंता एवं बाघ में पहाड़ियों को काटकर कुछ बुद्ध विहार बनाए गए। गुफाओं की भित्ति पर बौद्ध के जीवन की घटनाओं को भित्तिचित्र के रूप में चित्रित किया गया।

साहित्य एवं विज्ञान- गुप्तकालीन साहित्य के विकास में कालिदास का महान योगदान है। कालिदास संस्कृत के महान विद्वान थे। उन्होंने 'मेघदूत', 'अभिज्ञान शाकुन्तलम्', 'रघुवंश' आदि ग्रन्थों की रचना की। आचार्य व्यास, गुप्तकाल के प्रसिद्ध साहित्यकार थे। कामन्दक ने "नीतिसार" नामक अनुपम नीति ग्रंथ लिखा। वराहमिहिर सम्राट विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न के रूप में सुशोभित थे। जो खगोल एवं गणितज्ञ थे।

गुप्तकाल में गणित, पदार्थ विज्ञान, धातुविज्ञान, ज्योतिष विज्ञान तथा चिकित्सा विज्ञान की भी अधिक उन्नति हुई। इस काल में गणितज्ञों ने दशमलव पद्धति का प्रयोग किया। आर्यभट्ट ने ज्योतिष और खगोलशास्त्र में प्रमुख योगदान दिया।

धार्मिक जीवन- गुप्त सम्राट वैष्णव धर्म के अनुयायी (विष्णु के उपासक) थे। गुप्तकाल में, शिव, शक्तिदेवी, विष्णु आदि देवताओं की उपासना की गई। इस युग में अश्वमेघ यज्ञ जैसे धार्मिक यज्ञ किये गये। इस काल में महाभारत और रामायण का पुन: लेखन किया गया। संस्कृत भाषा का वर्तमान स्वरूप गुप्तकाल में ही बना। गुप्त सम्राट हिन्दू, बौद्ध, जैन आदि के देवस्थानों को बिना भेदभाव के उदारता से दान देते थे।

गुप्त साम्राज्य का पतन - कालान्तर में विशाल गुप्त साम्राज्य के उत्तराधिकारी अपने पूर्वजों की तरह योग्य साबित नहीं हुए। साथ ही हूणो के बार-बार आक्रमण करने से गुप्तकाल का पतन प्रारंभ हो गया। परिणामस्वरूप गुप्त साम्राज्य वाले क्षेत्र में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ जैसे, मगध के परवर्ती गुप्त नरेश, कन्नौज के मौखरी वंश, पूर्वी भारत (बंगाल) में गौड़ वंश, वल्लभी का मैत्रक राज्य, मालवा का यशोधर्मन, थानेश्वर का पुष्यभूति राज्य, दक्षिण भारत में चालुक्य तथा पल्लव राजवंश प्रमुख थे।

पुष्यभूति वंश का उदय- हरियाणा-दिल्ली के क्षेत्र में पुष्यभूति वंश या वर्धन वंश के राजाओं ने राज्य किया इनमें हर्षवर्द्धन सबसे प्रतापी राजा हुआ था।

हर्षवर्द्धन- हर्ष के पिता का नाम प्रभाकरवर्द्धन था। हर्ष ने हूणो को हराने में अपने बड़े भाई राज्यवर्द्धन की सहायता की। बंगाल के राजा शशांक ने धोखा देकर राज्यवर्द्धन का वध कर दिया। अत: हर्षवर्द्धन को राज्य की जिम्मेदारी उठाना पड़ी। वह 606ई. से सिंहासन पर बैठा। उसने बंगाल के शासक शंशाक से अपने भाई की हत्या का बदला लिया। हर्ष अपने पराक्रम, साहस, चतुराई से भारत को एक सूत्र में बाँधने में सफल हुआ। थानेश्वर उसकी राजधानी थी।

हर्ष के राजकवि बाणभट्ट ने अपनी पुस्तक 'हर्षचरित' में सम्राट हर्ष के जीवन तथा कार्यों के बारे में

लिखा है। चीनी यात्री ह्वेनसांग हर्ष के शासनकाल में भारत आया था। उसने अपने यात्रा विवरण में भारत के कई राज्यों की सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनीतिक स्थिति के बारे में लिखा है।

साम्राज्य विस्तार - हर्ष ने कन्नौज को राज्य की राजधानी बनाया, जिससे थानेश्वर और कन्नौज राज्य एक हो गये। हर्ष ने पंजाब, पूर्वी राजस्थान, असम और गंगाघाटी के प्रदेशों को जीतकर अपने साम्राज्य में मिला लिया। 620 ई. में पुलकेशिन द्वितीय ने हर्ष की विजय अभियान को नर्मदा नदी के किनारे पर रोक दिया। हर्ष के साम्राज्य में मगध, उड़ीसा, पूर्वी बंगाल, गुजरात, सौराष्ट्र, मालवा तथा सिन्धु प्रदेश सम्मिलित थे। हर्ष ने जिन राजाओं को हराया था वे सभी हर्ष को कर देते थे और युद्ध के समय उसकी मदद के लिए अपने सैनिक भेजते थे। इस काम के बदले में वे अपने क्षेत्र के राजा बने रहे।

धर्म- हर्ष सूर्य तथा शिव का उपासक था। उसने जीवन के अंतिम वर्षों में बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया

शिक्षण संकेत : हर्षकालीन साम्राज्य विस्तार के संबंध में मानचित्र पर चर्चा कराएँ।

था। वह दूसरे धर्मों का भी पूरा सम्मान करता था तथा उन्हें आश्रय देता था। हर्ष उदार शासक था। वह स्वयं विद्वान था और विद्वानों का आदर करता था।

हर्ष ने कन्नौज में सभी धर्मों का महासम्मेलन करवाया था। हर्ष प्रयाग में हर पांचवे वर्ष धार्मिक सभा का आयोजन कराता था। इस सम्मेलन में ब्राह्मण, धर्माचार्य, बौद्ध, जैन, तपस्वी, यात्री तथा हर्ष के अधीनस्थ सभी राजा आदि भाग लेते थे। हर्षवर्द्धन निर्धनों, अनाथों, अपंगों को दान देता था।

ह्वेनसाँग - चीनी यात्री ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण इस काल के राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा आर्थिक इतिहास जानने का प्रमाणिक साधन है। ह्वेनसाँग मध्य एशिया को पारकर चीन से भारत पहुँचा। उस समय उसकी उम्र मात्र 26 साल थी। अनेक वर्षों तक भारत भ्रमण करके वापस चीन लौट गया। ह्वेनसाँग के अनुसार बौद्ध धर्म पूर्वी भारत में लोकप्रिय था।

ह्वेनसाँग

नालंदा विश्वविद्यालय- नालंदा (बिहार राज्य) का राजगृह के निकट का एक पुरातात्विक स्थल उस समय देश का प्रमुख विश्वविद्यालय था। भारत और एशिया के अन्य देशों से विद्यार्थी यहाँ अध्ययन करने आते थे। नालंदा बौद्ध धर्म का प्रमुख केंद्र था। चीनी यात्री ह्वेनसाँग ने भी नालंदा की यात्रा की थी।

सामाजिक जीवन- ह्वेनसाँग के यात्रा विवरण के अनुसार हर्ष के शासन में प्रजा संपन्न तथा सुखी थी। अमीर, गरीब सभी लोग धार्मिक सहिष्णुता तथा सौहार्दपूर्वक रहते थे। कुछ लोग शाकाहारी और मांसाहारी दोनों प्रकार के भोजन करते थे। लोग गर्ममिजाजी (जिन्हें जल्दी गुस्सा आता है) तथा ईमानदार थे। राज्य में मृत्युदंड नहीं दिया जाता था।

हर्ष का शासन प्रबन्ध - साम्राज्य का सर्वोच्च अधिकारी तथा न्यायाधीश राजा होता था। मंत्रिपरिषद् में प्रधानमंत्री, राजपुरोहित, सेनापति, अर्थमंत्री विभागों के प्रमुख मंत्री थे। शासन की सुविधा के लिए साम्राज्य **भुक्तियों** (प्रान्तों), **विषयों** (जिलों) तथा **ग्रामों** में बंटा था। भुक्ति का शासक **उपरिक** (महाराज) कहलाता था। विषय का प्रधान कर्मचारी **विषयपति** तथा ग्राम का प्रधान **ग्रामिक** कहलाता था।

हर्ष प्रजा का बहुत ध्यान रखता था। वह दिन के पहले भाग में प्रशासन संबंधी कार्यों तथा दिन के दूसरे भाग में धार्मिक कार्यों में व्यतीत करता था। ह्वेनसांग के अनुसार- हर्षवर्द्धन ने छठवें धार्मिक समारोह में पाँच वर्ष में एकत्रित धन, दान में दे दिया। सन् 647 में हर्षवर्द्धन की मृत्यु हो गयी। उसका कोई पुत्र नहीं था। अत: योग्य उत्तराधिकारी के अभाव में उसका साम्राज्य नष्ट हो गया।

चालुक्य - दक्षिण भारत में सातवाहन शासकों के पतन के बाद कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय के साथ

लगभग इसी समय नवीन चालुक्य वंश का भी उदय हुआ। चालुक्यों की राजधानी वातापी थी। इनके प्रमुख शासक जयसिंह रणराज पुलकेशिन प्रथम, कीर्तिवर्मन, पुलकेशिन द्वितीय थे।

इस वंश का सर्वाधिक शक्तिशाली शासक पुलकेशिन द्वितीय था। इसने नर्मदा तट पर हर्षवर्द्धन को पराजित किया। चालुक्य नरेश कला के प्रेमी थे। उनके शासनकाल में कला तथा धर्म की उन्नति हुई। वातापी का मंगलेश का मंदिर, मेंगुती का शिवमंदिर, एहोल का विष्णु मंदिर इस काल की स्थापत्य कला के सुंदर उदाहरण है। चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के राजा खुसरो द्वितीय के पास दूतमण्डली भेजी थी।

पल्लव- सातवाहन राज्य के पतन के बाद पल्लव भी अपने अधीन इलाकों के शासक हो गये। इन्होंने अपनी राजधानी काँची (काँचीपुरम) बनायी। महेन्द्रवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन प्रथम, नरसिंहवर्मन द्वितीय, पल्लव वंश के प्रसिद्ध शासक हुए। नरसिंहवर्मन प्रथम ने चालुक्य राजा पुलकेशिन द्वितीय को युद्ध में पराजित किया। मामल्लपुरम (महाबलीपुरम) के पांच रथ मंदिरों का निर्माण पल्लव नरेशों ने कराया था।

राष्ट्रकूट- दक्षिण भारत में पल्लव, चालुक्यों से राष्ट्रकूट राजाओं के युद्ध होते रहते थे राष्ट्रकूटों ने चालुक्यों को हराकर उनके क्षेत्र को जीत लिया।

तमिल संत- इस काल में नई धार्मिक विचारधारा का जन्म हुआ, जो भक्ति कहलायी। इसमें कारीगर और किसान तथा अनेक जातियों के लोग शामिल थे, जो घूमते हुए विष्णु और शिव की स्तुति में गीत गाते थे। इनमें आलवार, विष्णु के उपासक और नयन्नार, शिव के उपासक थे। ये गीत जनसाधारण की तमिल भाषा में लिखे और गाए गये।

स्थापत्यकला - दक्षिण भारत के राजाओं को मंदिर निर्माण कराने का बड़ा शौक था। महाबलीपुरम् के रथ मंदिरों को पल्लव शासकों ने चट्टानों को काटकर बनवाया। कुछ मंदिर प्रस्तर खंडों से बनाये गये जैसे कांचीपुरम् का मंदिर। मंदिरों का उपयोग सामाजिक और धार्मिक केंद्र के रूप में होता था। मंदिरों के हितों के लिए प्रबंध समिति होती थी।

पारसी धर्म - पुलकेशिन द्वितीय ने ईरान के शासक खुसरो द्वितीय के पास दूतों को भेजा। सौ वर्ष बाद जरथुस्त्रियों ने ईरान को छोड़कर भारत के दक्षिण-पश्चिम तट पर आकार रहने लगे। यही लोग आगे चलकर पारसी कहलाये। इनकी पवित्र पुस्तक का नाम 'जेन्द अवेस्ता' है। पारसी समुदाय के लोगों ने भारतीय व्यापार एवं व्यवसाय में प्रमुख भूमिका निभायी।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए-

(अ) गुप्तवंश के प्रमुख शासकों के नाम लिखिए?

(ब) समुद्रगुप्त ने किन-किन राज्यों को जीता?

(स) गुप्तकाल में साम्राज्य को किन-किन भागों में बांटा गया था?

(द) हर्षवर्धन की विजयों का वर्णन किजिए।

(य) गुप्तकाल के प्रमुख साहित्यकारों के नाम लिखिए।

(र) चन्द्रगुप्त द्वितीय के द्वारा जीते गए राज्यों के नाम लिखिए?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए-

(अ) गुप्तकाल को भारतीय इतिहास का 'स्वर्ग युग' कहा जाता है। समझाइए।

(ब) 300 ई. से 800 ई. तक के राजनैतिक एवं सामाजिक दशा पर प्रकाश डालिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

(क) चन्द्रगुप्त द्वितीय के पिता .... थे।

(ख) .... चीनी यात्री था।

(ग) मेघदूत के रचियता .... थे।

(घ) मैहरौली में .... स्थित हैं।

4. जोड़ी बनाइए-

क	ख
कालिदास	ज्योतिषी और खगोलशास्त्री
अभिज्ञान शाकुन्तलम्	चित्रकला
अजन्ता	कालिदास
आर्यभट्ट	नीतिसार
कामन्दक	कवि

5. सही विकल्प चुनकर लिखिए-

(अ) मेघदूत के रचियता थे-

(i) चरक, (ii) वाल्मीकि, (iii)कालिदास, (iv)वात्सायन।

(ब) सूर्य सिद्धान्त का संबंध है।

(i) साहित्य, (ii) गणित, (iii) ज्योतिष, (iv) खगोलशास्त्र।

(स) चन्द्रगुप्त द्वितीय ने उपाधि धारण की।

(i) रत्न, (ii) देवव्रत, (iii) विक्रमादित्य।

(द) विषयपति, प्रशासक होता था।

(i) ग्राम का, (ii) जिले का, (iii) प्रान्त का।

प्रोजेक्ट कार्य

- गुप्तकाल के साहित्यकारों, गणितज्ञ, ज्योतिषों एवं खगोलशास्त्रियों की सूची बनाइए।
- गुप्तकाल की साहित्यिक कृतियों की सूची बनाइए।
- गुप्तकाल के प्रमुख राजाओं की सूची बनाइए।